भगवान बुद्ध के महाश्रावक

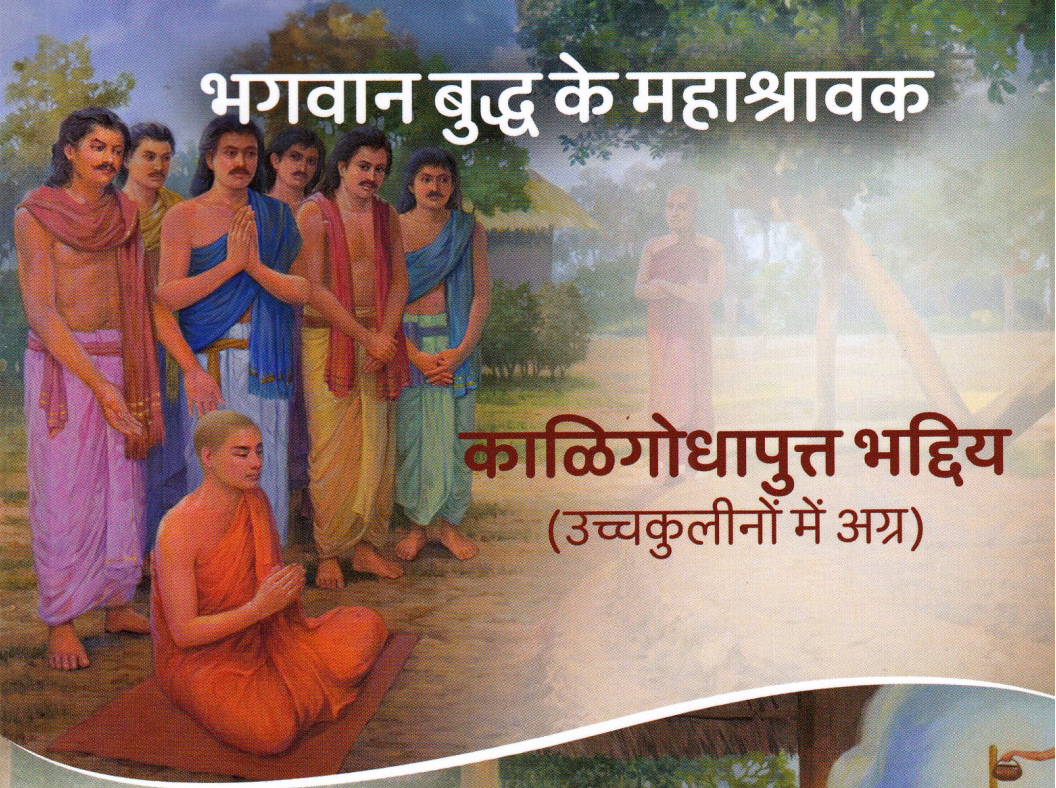

काळिगोधापुत्त भद्दिय
(उच्चकुलीनों में अग्र)

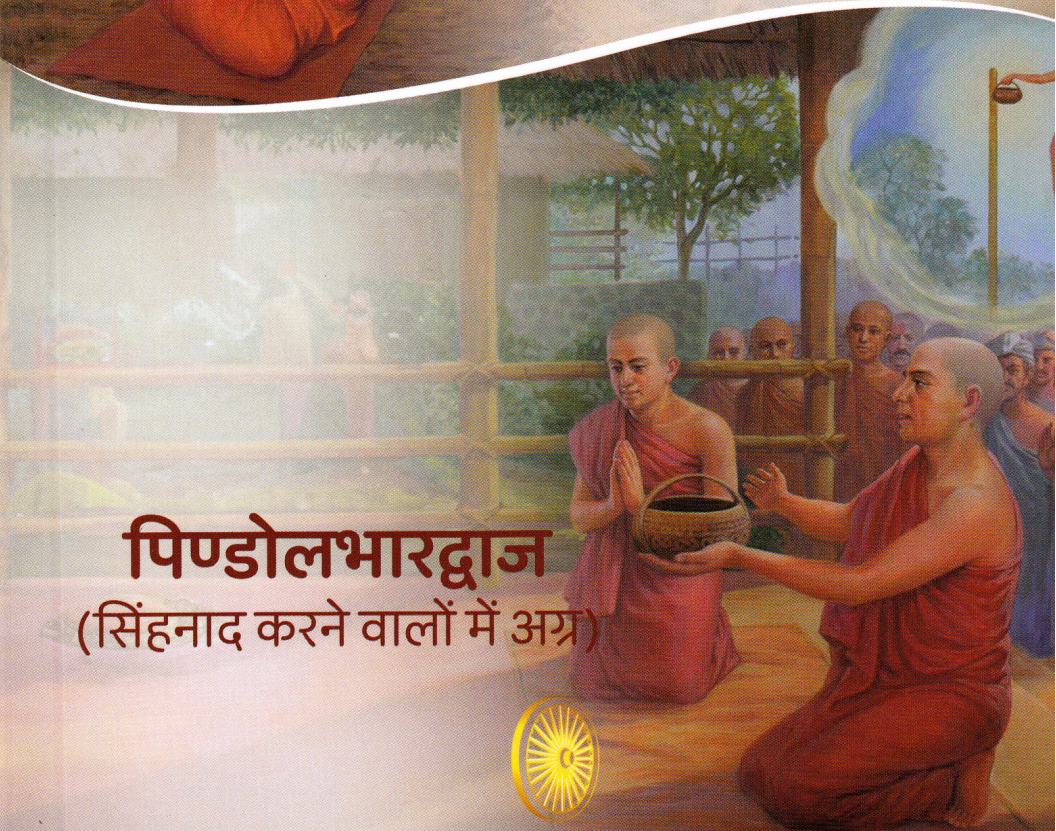

पिण्डोलभारद्वाज
(सिंहनाद करने वालों में अग्र)

विपश्यना विशोधन विन्यास

भगवान बुद्ध के महाश्रावक

काळिगोधापुत्त भद्दिय

(उच्चकुलीनों में अग्र)

एवं

पिण्डोलभारद्वाज

(सिंहनाद करने वालों में अग्र)

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

H116 - काळिगोधापुत्त भद्दिय एवं पिण्डोलभारद्वाज

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

आवरण पृष्ठः पुस्तक का आवरण डिजाइन और चित्र ग्लोबल विपश्यना पगोडा के आर्ट गैलरी से लिया गया है।
1. Ref. Pg_Hin_Lg_047 सात प्रव्रजित
2. Ref. Pg_Hin_Lg_056 चमत्कार पर रोक

प्रथम संस्करण : सितंबर 2024

मूल्य: ₹
Price: Rs.

ISBN 978-81-7414-482-9

प्रकाशक:
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोन: ०२५५३-२४४९९८, २४३५५३, २४४०७६
२४४०८६, २४४१४४, २४४४४०
Email: vri_admin@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रक:
अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

भगवान बुद्ध की उद्घोषणा

“एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं
उच्चाकुलिकानं यदिदं भद्दियो काळिगोधायपुत्तो।”

“एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं
सीहनादिकानं यदिदं पिण्डोलभारद्वाजो।”

– अङ्गुत्तरनिकाय (१.१.१९३, १९५)

****

“भिक्षुओ मेरे भिक्षु-श्रावकों में उच्चकुलीनों में अग्र हैं
कालिगोधा-पुत्र भद्दिय।”

“भिक्षुओ मेरे भिक्षु-श्रावकों में सिंहनाद करने वालों में अग्र हैं
पिण्डोलभारद्वाज।”

भगवान बुद्ध के महाश्रावक

भगवान बुद्ध के महाश्रावक
कालिगोधापुत्त भद्दिय एवं पिण्डोलभारद्वाज
विषयानुक्रमणिका

प्रकाशकीय 7

कालिगोधा-पुत्र भद्दिय

राजा भद्दिय का जन्म 11
शाक्य कुमारों का सामान्य ज्ञान 11
राजा भद्दिय सहित कुमारों की प्रव्रज्या 12
राजा भद्दिय की प्रव्रज्या 13
प्रव्रज्या हेतु कुमारों का प्रस्थान 14
उपालि की प्रव्रज्या सर्वप्रथम क्यों? 14
अहो सुख! अहो सुख! 15
भद्दिय का सिंहनाद 15
उच्च कुलों में अग्र 16
सुखविहारी जातक 16
वर्तमान कथा 17
अतीत कथा 17

भद्दिय की अतीत कथा 19
पदुमुत्तर बुद्ध का शासनकाल 19
बुद्धांतर काल 20

पिण्डोलभारद्वाज

पदुमुत्तर बुद्ध का शासन काल 23
अर्हत होने का लक्षण 23
हंसवती में जन्म 24
भगवान गौतम का शासन काल 25
वेदपाठी ब्राह्मण बना 25
प्रव्रज्या ग्रहण की 25
भारद्वाज के गुण 27
भगवान द्वारा प्रशंसा 27
कृपण को दान करना सिखाया 27
धुतांग व्रतधारी 28
सिंहनाद करने वालों में अग्र 29
महाराज उदयन को धर्म कहा 30
उदयन को अपना दोष सूझा 30
ऋद्धि-प्रदर्शन पर रोक 35
भारद्वाज को भगवान की फटकार 35
तथागत ने ऋद्धि-प्रदर्शन किया 36
पिण्डोलभारद्वाज ने भी कहा है 38
सूअर के दो गुण 38
सारस का एक गुण 38
विपश्यना साधना केंद्र 40

प्रकाशकीय

अपने पूर्व कर्मों के फलस्वरूप भद्दिय कपिलवस्तु के राजपरिवार में जनमे। उस समय के राजकुमारों का सांसारिक ज्ञान यही था कि वे भात (चावल, धान) के उत्पत्ति स्थल को नहीं बता पाते थे। अपने प्रिय एवं घनिष्ठ मित्र कुमार अनुरुद्ध के आग्रह पर उन्होंने राज्य त्याग दिया और छः शाक्य कुमारों एवं सेवक उपालि सहित प्रव्रजित हो गये। परिश्रमपूर्वक शीघ्र ही अर्हत हो गये। अर्हत्व प्राप्ति के पश्चात ध्यान सुख में विचरते हुए बार-बार मुखर हो जाते। सहभिक्षुओं को उनके इस उद्गार के कारण उनके ब्रह्मचर्यवास पर संदेह होने लगा। उन्होंने भगवान से कहा– लगता है भद्दिय स्थविर हरदम राजसुख को याद करते हैं।

अपनी सफाई में भगवान के सामने उन्होंने सिंहनाद किया। – भंते! राजसुख नहीं, मैं प्रव्रज्या सुख का स्मरण करता हूं। साथ ही अपने द्वारा पालन किये जाने वाले धुतांगों– पांशुकूलिक, त्रयचीवरिक, एकासनी, आरण्यक, वृक्षमूलक आदि का उल्लेख किया। इस प्रकार उन्होंने शंकालु भिक्षुओं को प्रसन्न और संतुष्ट कर दिया।

पदुमुत्तर भगवान ने भद्दिय को उच्चकुलों में अग्रस्थान पाने की भविष्यवाणी की थी, जो गौतमबुद्ध के शासन काल में पूरी हुई।

पूर्व काल में सिंह योनि में हंसवती में जनमे आयुष्मान पिण्डोलभारद्वाज भगवान पदुमुत्तर बुद्ध के संपर्क में आये और उनका भविष्यकथन सुनकर तत्काल शरीर त्याग कर ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए। वयस्क होने पर भगवान को एक सप्ताह तक दान दे सिंहनाद करने वाले भिक्षुओं में भगवान द्वारा अग्र स्थान पर प्रतिष्ठित किये जाने का आश्वासन प्राप्त किया।

उस भविष्यकथन के फलस्वरूप सम्यक संबुद्ध गौतम के शासन काल में भी वे ब्राह्मण कुल में ही जनमे। वयस्क होने पर वेदाध्ययन किया और शिष्यों को शिक्षा देने लगे, पर उनके लोभी स्वभाव के कारण उन सबों ने उन्हें त्याग दिया। एक बार घूमते-फिरते राजगृह पहुँचे। वहां बुद्ध का लाभ सत्कार देखकर लोभवश प्रव्रजित हो गये, पर भगवान ने अनुकंपा कर उन्हें भोजन में मात्रज्ञ बनाया। फिर परिश्रमपूर्वक तपते हुए षडभिज्ञ होकर अर्हत हुए।

एक समय राजगृह-श्रेष्ठी के यहां महल के ऊपर बांस पर टंगे चंदनपात्र को उन्होंने आकाश में उड़कर अपने ऋद्धि-बल से उतार लिया। इसके लिए भगवान ने उन्हें फटकारा क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि भिक्षु व्यक्तिगत स्वागत-सत्कार के लिये अनमोल विद्या का जनता के बीच प्रदर्शन करें।

आयुष्मान भारद्वाज धुतांग व्रतधारी और सिंहनाद करने वालों में अग्र होने के साथ ही भगवान द्वारा प्रशंसित भी थे। एक बार अपने एक गृहस्थकाल के कृपण मित्र को दान के लिये प्रेरित कर उसका उपकार किया।

राजा उदयन के प्रश्न करने पर उन्होंने राजा को समझाया कि भिक्षु नवजवान अवस्था में संसार के भोगों का त्याग कर ब्रह्मचर्य का आचरण क्यों कर पाते हैं। इससे प्रभावित होकर राजा ने बुद्ध, धर्म और संघ की शरण ग्रहण कर ली और आजीवन उनके उपासक बने रहे।

स्थविर के कथनों को प्रमाण स्वरूप भंते नागसेन ने मिलिंद प्रश्न में स्पष्ट किया है।